dada भगवान प्ररूपित

हुआ सो न्याय

जो कुदरत का न्याय है, उसमें एक पल भी अन्याय हुआ नहीं है।

E- Book Distribution by Apna Karma

apna karma

हुआ सो न्याय

विश्व की विशालता, शब्दातीत...

सभी शास्त्रों में जितना वर्णन है, उतना ही जगत् नहीं है। शास्त्रों में तो कुछ ही अंश है। बाकी, जगत् तो अवक्तव्य और अवर्णनीय है कि जो शब्दों में समा सके ऐसा नहीं है, तो फिर आप शब्दों से बाहर कहाँ से लाओगे? शब्दों में नहीं समाए तो शब्दों से बाहर आप उसका वर्णन कहाँ से समझोगे? जगत् इतना बड़ा, विशाल है। और मैं देखकर बैठा हूँ। इसलिए मैं आपको बता सकता हूँ कि कैसी विशालता है!

कुदरत तो हमेशा न्यायी ही है

जो कुदरत का न्याय है, उसमें एक क्षण के लिए भी अन्याय नहीं हुआ। यह कुदरत जो है, वह एक क्षण के लिए भी अन्यायी नहीं हुई। कोर्ट में अन्याय हुआ होगा, लेकिन कुदरत कभी अन्यायी हुई ही नहीं। कुदरत का न्याय कैसा है कि, यदि आप चोखे इन्सान हो और यदि आज आप चोरी करने जाओ तो आपको पहले ही पकड़वा देगी और यदि मैला इन्सान होगा तो उसे पहले दिन एन्करेज(प्रोत्साहित) करेगी। कुदरत का ऐसा हिसाब होता है कि पहलेवाले को चोखा रखना है इसलिए उसे पकड़वा देगी, उसे हेल्प नहीं करेगी और दूसरेवाले को हेल्प करती ही रहेगी और बाद में ऐसी मार मारेगी कि फिर वह ऊपर नहीं उठ पाएगा। वह अधोगति में जाएगा। कुदरत एक मिनट भी अन्यायी नहीं हुई। लोग मुझे पूछते हैं कि यह आपके पैर में फ्रेक्चर हुआ है, वह? यह सब कुदरत ने न्याय ही किया है।

apna karma

यदि कुदरत के न्याय को समझोगे कि 'हुआ सो न्याय', तो आप इस जगत् में से मुक्त हो पाओगे वर्ना कुदरत को ज़रा-सा भी अन्यायी समझा तो वह आपके लिए जगत् में उलझने का ही कारण है। कुदरत को न्यायी मानना, उसका नाम ज्ञान। 'जैसा है वैसा' जानना, उसका नाम ज्ञान और 'जैसा है वैसा' नहीं जानना, उसका नाम अज्ञान।

एक आदमी ने दूसरे आदमी का मकान जला दिया, तो उस समय कोई पूछे कि भगवान यह क्या है? इसका मकान इस आदमी ने जला दिया। यह न्याय है या अन्याय? तब कहे, 'न्याय। जला डाला वही न्याय।' अब इस पर वह कुढ़ता रहे कि नालायक है और ऐसा है, वैसा है। तब फिर उसे अन्याय का फल मिलेगा। वह न्याय को ही अन्याय कहता है! जगत् बिल्कुल न्याय स्वरूप ही है। एक क्षणभर के लिए भी इसमें अन्याय नहीं होता।

जगत् में न्याय ढूँढने से ही तो पूरी दुनिया में लड़ाइयाँ हुई हैं। जगत् न्याय स्वरूप ही है। इसलिए इस जगत् में न्याय ढूँढना ही मत। जो हुआ, सो न्याय। जो हो गया वही न्याय। ये कोर्ट आदि सब बने वे, न्याय ढूँढते हैं इसलिए! अरे भाई, न्याय होता होगा?! उसके बजाय 'क्या हुआ' उसे देख! वही न्याय है।

'न्याय' स्वरूप अलग है और अपना यह फल स्वरूप अलग है! न्याय-अन्याय का फल, वह तो हिसाब से आता है और हम उसके साथ न्याय जॉइन्ट करने जाते हैं, फिर कोर्ट में ही जाना पड़ेगा न! और वहाँ जाकर, थककर, आखिर में वापस ही आना है!

आपने किसी को एक गाली दी तो फिर वह आपको दो-तीन गालियाँ दे देगा, क्योंकि उसका मन आप पर गुस्सा होता है। तब लोग क्या कहते हैं? तूने क्यों तीन गालियाँ दी, इसने तो एक ही दी थी। तब उसमें क्या न्याय है? उसका हमें तीन ही देने का हिसाब होगा, पिछला हिसाब चुका देते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, चुका देते हैं।

दादाश्री : वसूल करते हैं या नहीं करते? आपने उसके पिताजी को रुपये उधार दिए हों, लेकिन फिर कभी हमें मौका मिले तो वसूल कर लेते हो न? लेकिन वह तो समझेगा कि अन्याय कर रहा है। उसी प्रकार कुदरत का न्याय है। जो पिछला हिसाब होता है, वह सारा इकट्ठा कर देता है। अब यदि कोई स्त्री उसके पति को परेशान कर रही हो, तो वह कुदरती न्याय है। उसका पति समझता है कि यह पत्नी बहुत खराब है और पत्नी क्या समझती है कि पति खराब है। लेकिन यह कुदरत का न्याय ही है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यदि आप शिकायत करने आते हो तो मैं शिकायत नहीं सुनता, इसका क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : अब पता चला कि यह न्याय है।

बुना हुआ खोले, कुदरत

दादाश्री : यह हमारी खोज हैं न सारी! भुगते उसी की भूल। देखो कितनी अच्छी खोज है! किसी के साथ टकराव में मत आना और व्यवहार में न्याय मत ढूँढना।

नियम कैसा है कि जैसे बुना होगा, वह बुनाई वैसे ही वापस खुलेगी। अन्यायपूर्वक बुना हुआ होगा तो अन्याय से खुलेगा और न्याय से बुना होगा तो न्याय से खुलेगा। वैसे यह सारा बुना हुआ खुल रहा है और बाद में लोग उसमें न्याय ढूँढते हैं। भाई, न्याय क्या ढूँढ रहा है, कोर्ट की तरह? अरे भाई, अन्यायपूर्वक तूने बुना और अब तू न्यायपूर्वक उधेड़ने चला है? वह कैसे संभव है? वह तो नौ से 'गुणा' किए हुए में नौ से 'भाग' लगाए तभी अपनी मूल जगह पर आएगा। कई बुनी हुई उलझनें पड़ी हैं। अत: मेरे शब्द जिसने पकड़ लिए हैं, वे उसका काम निकाल देंगे न!

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा, यह दो-तीन शब्द पकड़े हों और जिज्ञासु मनुष्य हो, तो उसका काम हो जाएगा।

दादाश्री : काम हो जाएगा। ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद नहीं बने तो काम हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में 'तू न्याय मत ढूँढना' और 'भुगते उसी की भूल', ये दो सूत्र पकड़े हैं।

दादाश्री : न्याय मत ढूँढना, यदि यह सूत्र पकड़े रखा तो उसका सब ऑलराइट हो जाएगा। ये न्याय ढूँढते हैं, इसीलिए सब उलझनें खड़ी हो जाती हैं।

पुण्योदय से खूनी भी छूटे निर्दोष...

प्रश्नकर्ता : कोई किसी का खून करे, तो वह भी न्याय ही कहलाएगा?

दादाश्री : न्याय से बाहर तो कुछ नहीं होता। भगवान की भाषा में न्याय ही कहलाता है। सरकार की भाषा में नहीं कहलाता, इस लोकभाषा में नहीं कहलाता। लोकभाषा में तो खून करनेवाले को ही पकड़कर लाते हैं कि यही गुनहगार है। और भगवान की भाषा में क्या कहते हैं? तब कहें, 'जिसका खून हुआ, वही गुनहगार है।' यदि पूछें, 'यह खून करनेवाले का गुनाह नहीं है?' तब कहें, खून करनेवाला जब पकड़ा जाएगा, तब वह गुनहगार माना जाएगा! अभी तो, वह नहीं पकड़ा गया है और यह पकड़ा गया! आपकी समझ में नहीं आया?

प्रश्नकर्ता : कोर्ट में कोई मनुष्य खून करके निर्दोष छूट जाता है, वह उसके पूर्वकर्म का बदला लेता है या फिर अपने पुण्य की वजह से वह ऐसे छूट जाता है? वह क्या है?

दादाश्री : पुण्य और पूर्वकर्म का बदला, वह एक ही बात है। उसका पुण्य था, इसलिए छूट गया और किसी ने गुनाह नहीं किया हो तो भी फँस जाता है। जेल जाना पड़ता है। वह तो उसके पाप का उदय है, वहाँ कोई चारा ही नहीं है।

apna karma

बाकी, यह जो दुनिया है, इसकी कोर्टों में शायद कभी अन्याय हो सकता हैं, लेकिन कुदरत ने इस दुनिया में कभी अन्याय नहीं किया, न्याय में ही रहती है। कुदरत न्याय से बाहर कभी भी नहीं गई। फिर तूफान दो आएँ या एक आया, लेकिन न्याय में ही होती है।

प्रश्नकर्ता : आपकी दृष्टि में, जो विनाश होते द्रश्य दिखते हैं, वे हमारे लिए श्रेय ही हैं न?

दादाश्री : विनाश होता दिखे, उसे श्रेय किस तरह कहेंगे? लेकिन विनाश होता है, वह नियम से सही है। कुदरत विनाश करती है, वह भी सही है और कुदरत जिसका पोषण करती है, वह भी सही है। सब रेग्युलर करती है, ऑन द स्टेज! लोग तो खुद के स्वार्थ को लेकर शिकायत करते हैं कि, 'मेरी फसल जल गई।' जब कि छोटी फसलवाले कहते हैं कि, 'हमारे लिए अच्छा हुआ।' अर्थात् लोग तो अपने-अपने स्वार्थ का ही गाते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि कुदरत न्यायी है, तो फिर भूकंप आते हैं, तूफान आते हैं, अतिवृष्टि होती है, वह क्यों?

दादाश्री : वह सब न्याय ही हो रहा है। बारिश होती है, फसल पकती है, यह सब न्याय ही हो रहा है। भूकंप आते हैं, वह भी न्याय हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : वह कैसे?

दादाश्री : जितने गुनहगार होंगे उतनों को ही कुदरत पकड़ेगी, दूसरों को नहीं। ये सब गुनहगार को ही पकड़ते हैं! यह जगत् बिल्कुल डिस्टर्ब नहीं हुआ है। एक सेकन्ड के लिए भी न्याय से बाहर कुछ नहीं गया।

जगत् में ज़रूरत चोर और साँप की

तब लोग मुझे पूछते हैं कि ये चोर और जेबकतरे क्या करने आए होंगे? भगवान ने क्यों इन्हें जन्म दिया होगा? अरे, वे नहीं होते तो तुम्हारी जेबें

apna karma

कौन खाली करेगा? भगवान क्या खुद आएँगे? तुम्हारा चोरी का धन कौन पकड़ेगा? तुम्हारा काला धन होगा तो कौन ले जाएगा? वे बिचारे तो निमित्त हैं। अत: इन सभी की आवश्यकता है।

प्रश्नकर्ता : किसी की पसीने की कमाई भी चली जाती है।

दादाश्री : वह तो इस जन्म की पसीने की कमाई है, लेकिन पहले का सारा हिसाब है न! बही खाता बाकी है इसलिए वर्ना कोई कभी हमारा कुछ भी नहीं ले सकता। किसी से ले सके, ऐसी शक्ति ही नहीं है। और ले लेना वह तो हमारा कुछ अगला-पिछला हिसाब है। इस दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ कि जो किसी का कुछ कर सके। इतना नियमवाला जगत् है। बहुत नियमवाला जगत् है। यह पूरा मैदान साँपों से भरा हो, लेकिन साँप हमें छू नहीं सकता, इतना नियमवाला जगत् है। बहुत हिसाबवाला जगत् है। यह जगत् बहुत सुंदर है, न्याय स्वरूप है लेकिन लोगों की समझ में नहीं आता।

कारण का पता चले, परिणाम पर से

यह सब रिज़ल्ट है। जैसे परीक्षा का रिज़ल्ट आता है न, यह मैथेमैटिक्स (गणित) में सौ मार्क्स में से पंचानवे मार्क्स आएँ और इंग्लिश में सौ मार्क्स में से पच्चीस मार्क्स आएँ। तब क्या हमें पता नहीं चलेगा कि इसमें कहाँ पर भूल रह गई है? इस परिणाम पर से, किस कारण से भूल हुई वह हमें पता चलेगा न? ये सारे संयोग जो इकट्ठा होते हैं, वे सभी परिणाम हैं। और उस परिणाम पर से, क्या कॉज़ था, वह भी हमें पता चलता है।

इस रास्ते पर सभी लोगों का आना-जाना हो और बबूल का कांटा ऐसे सीधा पड़ा हुआ हो, बहुत लोग आएँ-जाएँ लेकिन कांटा वैसे का वैसा पड़ा रहता है। वैसे तो आप कभी भी बूट-चप्पल पहने बगैर घर से नहीं निकलते लेकिन उस दिन किसी के वहाँ गए और शोर मचे कि चोर आया, चोर आया, तब आप नंगे पैर दौड़े और कांटा आपके पैर में लग जाए। तो वह आपका हिसाब! वह भी ऐसा कि आरपार निकल जाए, ऐसा लगे! अब

apna karma

यह संयोग कौन इकट्ठे कर देता है? यह 'व्यवस्थित शक्ति'(साइन्टिफिक सरमकस्टेन्शियल एविडेन्स)इकट्ठे कर देता है।

कुदरत के कानून

मुंबई के फोर्ट एरिया में आपकी सोने की चैनवाली घड़ी खो जाए और आप घर आकर ऐसा मान लो कि 'भाई, अब वह हमारे हाथ नहीं लगेगी।' लेकिन दो दिन बाद पेपर में पढ़ें कि जिसकी घड़ी हो, वह प्रमाण देकर हमसे ले जाए और विज्ञापन के पैसे दे जाए। अर्थात् जिसका है, उसे कोई ले नहीं सकता। जिसका नहीं है, उसे मिलनेवाला नहीं। एक परसेन्ट भी किसी तरह आगे-पीछे नहीं कर सकते। इतना नियमबद्ध जगत् है। कोर्ट कैसी भी होगी लेकिन वे कोर्ट कलयुग के आधार पर होंगी, लेकिन यह कुदरत नियम के अधीन है। कोर्ट के कानून भंग किए होंगे तो कोर्ट के गुनहगार बनोगे, लेकिन कुदरत के कानून मत तोड़ना।

यह तो है खुद के ही प्रोजेक्शन

यह सारा प्रोजेक्शन आपका ही है। लोगों को क्यों दोष दें?

प्रश्नकर्ता : क्रिया की प्रतिक्रिया है यह?

दादाश्री : उसे प्रतिक्रिया नहीं कहते। लेकिन यह सारा प्रोजेक्शन आपका है। प्रतिक्रिया कहो तब फिर 'एक्शन एन्ड रिएक्शन आर इक्वल एन्ड ऑपॉज़िट' होगा।

यह तो दृष्टांत दे रहे हैं, सिमिलि दे रहे हैं। आपका ही प्रोजेक्शन है यह। अन्य किसी का हाथ नहीं है इसलिए आपको सावधान रहना चाहिए कि यह सारी ज़िम्मेदारी मुझ पर है। ज़िम्मेदारी समझने के बाद घर में बर्ताव कैसा होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वैसा बर्ताव करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, खुद की ज़िम्मेदारी समझें। वर्ना वह तो कहेगा कि

apna karma

भगवान की भक्ति करोगे तो सब चला जाएगा। पोलम्पोल! लोगों ने भगवान के नाम पर *पोल* (घोटाला, गड़बड़) चलाई। ज़िम्मेदारी खुद की है। होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल। खुद का ही प्रोजेक्शन है न!

कोई दु:ख दे तो जमा कर लेना। जो तूने पहले दिया होगा, वही वापस जमा करना है। क्योंकि बिना वजह कोई किसी को दु:ख पहुँचा सके, यहाँ पर ऐसा कानून ही नहीं है। उसके पीछे कॉज़ होने चाहिए। इसलिए जमा कर लेना।

जिसे जगत् में से भाग छूटना है, उसे...

फिर कभी दाल में नमक ज़्यादा पड़ गया हो तो वह भी न्याय!

प्रश्नकर्ता : क्या हो रहा है? उसे देखना, ऐसा आपने कहा है, तब फिर न्याय करने का सवाल ही कहाँ रहा?

दादाश्री : न्याय, मैं ज़रा अलग कहना चाहता हूँ। देखो न, उनके हाथ ज़रा केरोसीनवाले होंगे, उसी हाथ से लोटा उठाया होगा। इसलिए केरोसीन की बदबू आ रही थी। अब मैं तो ज़रा पानी पीने गया, तो मुझे केरोसीन की बदबू आई। ऐसे में हम 'देखते और जानते हैं' कि यह क्या हुआ! फिर न्याय क्या होना चाहिए? कि हमारे हिस्से में यह कहाँ से आया? पहले कभी भी नहीं आया था और यह आज कहाँ से आया? यानी यह हमारा ही हिसाब है। इसलिए इस हिसाब को पूरा कर दो। लेकिन वह किसी को पता नहीं चले, इस तरह पूरा कर देना। फिर सुबह उठने के बाद, वह बहन आए और फिर से वही पानी मँगवाकर दे तो हम फिर से उसे पी जाएँगे। लेकिन कोई जान नहीं पाएगा। अब अज्ञानी इस जगह पर क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : शोर मचा देगा।

दादाश्री : घर के सारे लोग जान जाएँगे कि आज सेठजी के पानी में केरोसीन पड़ा।

प्रश्नकर्ता : पूरा घर हिल जाएगा!

दादाश्री : अरे, सबको पागल कर दे! और फिर पत्नी तो बेचारी चाय में शक्कर डालना भी भूल जाए! एक बार हिल उठे तो फिर क्या होगा? बाकी सभी बातों में भी हिल उठेंगे।

प्रश्नकर्ता : दादा, उसमें हम शिकायत न करें वह तो ठीक है, लेकिन बाद में शांत चित्त से घरवालों से कहना तो चाहिए न कि भाई, पानी में केरोसीन आ गया था। आगे से ध्यान रखना।

दादाश्री : वह कब कहना चाहिए? चाय-नाश्ता कर रहे हों, हँसी मज़ाक कर रहे हों, तब हँसते-हँसते बात कर सकते हैं।

जैसे अभी हमने यह बात ज़ाहिर की न? इसी तरह जब हँस रहे हों तो बात ज़ाहिर कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् सामनेवाले को चोट न पहुँचे, इस तरह कहना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, इस तरह कहा जाए तो वह सामनेवाले को हेल्प करेगा। लेकिन सबसे अच्छा रास्ता तो यही है कि मेरी भी चुप और तेरी भी चुप! उसके जैसा एक भी नहीं। क्योंकि जिसे इस संसार से छूटना है, वह ज़रा-सी भी शिकायत नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : सलाह के तौर पर भी नहीं कहें? क्या वहाँ चुप रहना चाहिए?

दादाश्री : वह उसका सारा हिसाब लेकर आया है। समझदार बनने का सारा हिसाब भी वह लेकर ही आया है।

हम क्या कहते हैं कि यहाँ से जाना हो तो भाग छूटो। और भाग जाना हो तो कुछ बोलना मत। यदि रात को भाग जाना हो और शोर मचाएँ तो पकड़ लेंगे न!

भगवान के वहाँ कैसा होता है?

भगवान न्याय स्वरूप नहीं है और भगवान अन्याय स्वरूप भी नहीं है। किसी को दु:ख नहीं हो, वही भगवान की भाषा है। न्याय-अन्याय तो लोकभाषा है।

चोर, चोरी करने को धर्म मानता है, दानी, दान देने को धर्म मानता है। वह लोकभाषा है, भगवान की भाषा नहीं है। भगवान के वहाँ ऐसा वैसा कुछ है ही नहीं। भगवान के वहाँ तो इतना ही है कि, 'किसी जीव को दु:ख नहीं हो, वही हमारी आज्ञा है!'

न्याय-अन्याय तो कुदरत ही देखती है। बाकी, यहाँ जो जगत् का न्याय-अन्याय है, वह दुश्मनों को, गुनहगारों को हेल्प करता है। कहेंगे, 'होगा बेचारा, जाने दो न!' तब गुनहगार भी छूट जाता है। 'ऐसा ही होता है' कहेंगे। बाकी, कुदरत का न्याय, उसमें तो कोई चारा ही नहीं है। उसमें किसी की नहीं चलती!

निजदोष दिखाए अन्याय

केवल खुद के दोष के कारण पूरा जगत् अनियमवाला लगता है। एक क्षण के लिए भी अनियमवाला हुआ ही नहीं। बिल्कुल न्याय में ही रहता है। यहाँ की कोर्ट के न्याय में फर्क पड़ जाए, वह गलत निकले लेकिन इस कुदरत के न्याय में फर्क नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : कोर्ट का न्याय, वह कुदरत का न्याय है या नहीं?

दादाश्री : वह सब कुदरत ही है। लेकिन कोर्ट में हमें ऐसा लगे कि इस जज ने ऐसा किया। ऐसा कुदरत में नहीं लगता न? लेकिन वह तो बुद्धि की तकरार है!

प्रश्नकर्ता : आपने कुदरत के न्याय की तुलना कम्प्यूटर से की लेकिन कम्प्यूटर तो मैकेनिकल होता है।

apna karma

दादाश्री : समझाने के लिए उस जैसा अन्य कोई साधन नहीं है न, इसलिए मैंने यह सिमिली दी है। बाकी, कम्प्यूटर तो कहने के लिए है कि जैसे कम्प्यूटर में फ़ीड करते हैं, वैसे ही इसमें खुद के भाव डलते हैं। मतलब एक जन्म के भावकर्म डलने के बाद दूसरे जन्म में उसका परिणाम आता है। तब उसका विसर्जन होता है। वह इस 'व्यवस्थित शक्ति' के हाथों में है। वह एक्ज़ेक्ट न्याय ही करती है। जैसा न्याय में आया, वैसा ही करती है। बाप अपने बेटे को मार डाले, वैसा भी न्याय में आता है। फिर भी वह न्याय कहलाता है। कुदरत का न्याय तो न्याय ही कहलाता है। क्योंकि जैसा बाप-बेटे का हिसाब था, वैसा ही चुकाया। वह चुक गया। इसमें हिसाब ही चुकते हैं, और कुछ नहीं होता।

कोई गरीब आदमी लाटरी में एक लाख रुपये जीत जाता है न, वह भी न्याय है और किसी की जेब कटी, वह भी न्याय है।

कुदरत के न्याय का आधार क्या?

प्रश्नकर्ता : कुदरत न्यायी है, इसका आधार क्या है? न्यायी कहने के लिए कोई आधार तो चाहिए न?

दादाश्री : वह न्यायी है, वह तो केवल आपके जानने के लिए ही है। आपको विश्वास होगा कि न्यायी है। लेकिन बाहर के लोगों को (अज्ञानता में) कुदरत न्यायी है, यह कभी भी विश्वास नहीं होगा। क्योंकि उनके पास दृष्टि नहीं है न! (क्योंकि जिसने आत्मज्ञान प्राप्त नहीं किया, उसकी दृष्टि सम्यक नहीं हुई है।)

बाकी, हम क्या कहना चाहते हैं? आफ्टर ऑल, जगत् क्या है? कि भाई, ऐसा ही है। एक अणु का भी फर्क नहीं हो इतना न्यायस्वरूप है, बिल्कुल न्यायी है।

कुदरत दो चीज़ों से बनी है। एक स्थायी, सनातन वस्तु और दूसरी अस्थायी वस्तु, जो अवस्था रूप है। उसकी अवस्था बदलती रहती है और

वह नियमानुसार बदलती रहती है। देखनेवाला व्यक्ति खुद की एकांतिक बुद्धि से देखता है। अनेकांत बुद्धि से कोई सोचता ही नहीं, लेकिन खुद के स्वार्थ से ही देखता है।

किसी का इकलौता बेटा मर जाए, तो भी न्याय ही है। इसमें किसी ने अन्याय नहीं किया। इसमें भगवान का, किसी का अन्याय है ही नहीं, न्याय ही है। इसलिए हम कहते हैं न कि जगत् न्याय स्वरूप है। निरंतर न्याय स्वरूप में ही है।

किसी का इकलौता बेटा मर जाए, तब सिर्फ उसके घरवाले ही रोते हैं। दूसरे आस-पास वाले क्यों नहीं रोते? वे घरवाले खुद के स्वार्थ से रोते हैं। यदि सनातन वस्तु में (खुद के आत्म स्वरूप में) आ जाए तो कुदरत न्यायी ही है।

इन सब बातों का तालमेल बैठता है? तालमेल बैठे तो समझना कि बात सही है। ज्ञान अमल में लाए तो कितने दु:ख कम हो जाएँ!

और एक सेकन्ड के लिए भी न्याय में फर्क नहीं होता। यदि अन्यायी होता तो कोई मोक्ष में जाता ही नहीं। ये तो कहते हैं कि अच्छे लोगों को परेशानियाँ क्यों आती हैं? लेकिन लोग, ऐसी कोई परेशानी पैदा नहीं कर सकते। क्योंकि खुद यदि किसी बात में दखल नहीं करे तो कोई ताक़त ऐसी नहीं है कि जो आपका नाम दे। खुद ने दखल की है इसलिए यह सब खड़ा हो गया है।

प्रैक्टिकल चाहिए, थ्योरी नहीं

अब शास्त्रकार क्या लिखते हैं? 'हुआ सो न्याय' नहीं कहेंगे। वे तो 'न्याय वही न्याय' कहेंगे। अरे भाई, तेरी वजह से तो हम भटक गए! अर्थात् थ्योरेटिकली ऐसा कहते हैं कि न्याय वही न्याय, तब प्रैक्टिकल क्या कहते हैं कि हुआ सो न्याय। बिना प्रैक्टिकल दुनिया में कोई काम नहीं होता। इसलिए यह थ्योरेटिकली टिक नहीं पाया।

apna karma

यानी कि जो हुआ, वही न्याय। निर्विकल्प बनना है तो, हुआ सो न्याय। विकल्पी बनना हो तो न्याय ढूँढना। भगवान बनना हो तो जो हुआ सो न्याय, और भटकना हो तो न्याय ढूँढते हुए निरंतर भटकते रहो।

लोभी को खटके नुकसान

यह जगत् गप्प नहीं है। जगत् न्याय स्वरूप है। कुदरत ने कभी भी बिल्कुल, अन्याय नहीं किया। कुदरत कहीं पर आदमी को काट देती है, एक्सिडेन्ट हो जाता है, तो वह सब न्याय स्वरूप है। न्याय के बाहर कुदरत गई नहीं। यह बेकार ही नासमझी में कुछ भी कहते रहते हैं और जीवन जीने की कला भी नहीं आती, और देखो चिंता ही चिंता। इसलिए जो हुआ उसे न्याय कहो।

आपने दुकानदार को सौ रुपये का नोट दिया। उसने पाँच रुपये का सामान दिया और पाँच रुपये आपको वापस दिए। शोरगुल में वह नब्बे रुपये वापस करना भूल गया। उसके पास कई सौ-सौ के नोट, कई दस-दस के नोट, बिना गिने हुए पड़े थे। वह भूल गया और आपको पाँच दे रहा था, तब आपने क्या कहा?, 'मैंने आपको सौ का नोट दिया था।' वह कहे, 'नहीं।' उसे वही याद है, वह भी झूठ नहीं बोलता। तब आप क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह फिर मन में खटकता ही रहता है कि इतने पैसे गए। मन शोर मचाता है।

दादाश्री : वह खटकता है तो जिसे खटकता है, उसे नींद नहीं आएगी। 'हमें' (शुद्धात्मा को) क्या? इस शरीर में जिसे खटकेगा, उसे नींद नहीं आएगी। थोड़े ही सभी को खटकता है? लोभी को खटकेगा! तब उस लोभी से कहना, 'खटक रहा है? तो सो जा न! अब तो सारी रात सोना ही पड़ेगा!'

प्रश्नकर्ता : उसकी तो नींद भी जाएगी और पैसे भी जाएँगे।

apna karma

दादाश्री : हाँ, इसलिए वहाँ पर 'हुआ सो करेक्ट', यह ज्ञान हाज़िर रहा तो अपना कल्याण हो गया।

'हुआ सो न्याय' समझे तो पूरा संसार पार हो जाए, ऐसा है। इस दुनिया में एक सेकन्ड भी अन्याय होता ही नहीं। न्याय ही हो रहा है। लेकिन बुद्धि हमें फँसाती है कि इसे न्याय कैसे कह सकते हैं? इसलिए हम मूल बात बताना चाहते हैं कि यह कुदरत का है और बुद्धि से आप अलग हो जाओ। बुद्धि इसमें फँसाती है। एक बार समझ लेने के बाद बुद्धि का मानना मत। हुआ सो न्याय। कोर्ट के न्याय में भूल-चूक हो सकती है, उल्टा-सीधा हो जाता है, लेकिन इस न्याय में कोई फर्क नहीं।

कम-ज़्यादा बँटवारा, वही न्याय

एक भाई हो, उसका बाप मर जाए तो जो सभी भाईयों की जमीन है, वह बड़े भाई के कब्ज़े में आ जाती है। अब बड़ा भाई है, वह छोटों को बार-बार धमकाता रहता है और ज़मीन नहीं देता। ढाई सौ बीघा ज़मीन थी। चारों भाईयों को पचास-पचास बीघा देनी थी। तब कोई पच्चीस ले गया, कोई पचास ले गया, कोई चालीस ले गया और किसी के हिस्से में पाँच ही आई।

अब उस समय क्या समझना चाहिए? जगत् का न्याय क्या कहता है कि बड़ा भाई लुच्चा है, झूठा है। कुदरत का न्याय क्या कहता है, बड़ा भाई करेक्ट है। पचासवाले को पचास दी, बीसवाले को बीस दी, चालीसवाले को चालीस और इस पाँचवाले को पाँच ही दी। बाकी पिछले जन्म के दूसरे हिसाब में चुकता हो गया। आपको मेरी बात समझ में आती है?

यदि झगड़ा नहीं करना हो तो कुदरत के तरीके से चलना, वर्ना यह जगत् तो झगड़ा है ही। यहाँ न्याय नहीं हो सकता। न्याय तो देखने के लिए है कि मुझ में कुछ परिवर्तन, कुछ फर्क हुआ है? यदि मुझे न्याय मिलता है तो मैं न्यायी हूँ, यह तय हो गया। न्याय तो एक अपना थर्मामीटर है। बाकी, व्यवहार में न्याय नहीं हो सकता न! न्याय में आया यानी मनुष्य पूर्ण हो गया। तब तक, वह या तो अबव नॉर्मेलिटी में या बिलो नॉर्मेलिटी में ही रहता है!

apna karma

अर्थात् वह बड़ा भाई उस छोटे को पूरा हिस्सा नहीं देता, पाँच ही बीघा देता है। वहाँ लोग न्याय करने जाते हैं और उस बड़े भाई को बुरा ठहराते हैं। अब यह सब गुनाह है। तू भ्रांतिवाला है, इसलिए तूने भ्रांति को ही सच माना। फिर कोई चारा ही नहीं है और सच माना है, यानी कि इस व्यवहार को ही सच माना है तो मार ही खाएगा न! बाकी, कुदरत के न्याय में तो कोई भूलचूक है ही नहीं।

अब वहाँ पर हम ऐसा नहीं कहते कि 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, इन्हें इतना करना है।' वर्ना हम वीतराग नहीं कहलाएँगे। यह तो हम देखते रहते हैं कि पिछला क्या हिसाब है!

यदि हमसे कहे कि आप न्याय कीजिए। न्याय करने को कहे, तब हम कहेंगे कि भाई, हमारा न्याय अलग तरह का होता है और इस जगत् का न्याय अलग तरह का है। हमारा तो कुदरत का न्याय है। वर्ल्ड का रेग्युलेटर है न, वह इसे रेग्युलेशन में ही रखता है। एक क्षण के लिए भी अन्याय नहीं होता। लेकिन लोगों को अन्याय क्यों लगता है? फिर वह न्याय ढूँढता है। क्यों तुझे दो नहीं दिए और पाँच ही दिए? अरे भाई, जो दिया है, वही न्याय है। क्योंकि पहले के हिसाब हैं सारे, आमने-सामने। उलझा हुआ ही है, हिसाब है। यानी कि न्याय तो थर्मामीटर है। थर्मामीटर से देख लेना चाहिए कि 'मैंने पहले न्याय नहीं किया था, इसलिए मेरे साथ अन्याय हुआ है। इसलिए थर्मामीटर का दोष नहीं है।' आपको क्या लगता है? मेरी यह बात कुछ हेल्प करेगी?

प्रश्नकर्ता : बहुत हेल्प करेगी।

दादाश्री : जगत् में न्याय मत ढूँढना। जो हो रहा है, वही न्याय है। हमें देखना है कि यह क्या हो रहा है। तब कहे, 'पचास बीघा के बजाय पाँच बीघा दे रहा है। भाई से कहना, 'ठीक है। अब आप खुश हो न?' वह कहे, 'हाँ।' फिर दूसरे दिन से साथ में खाना-पीना, उठना-बैठना। यह हिसाब है। हिसाब से बाहर तो कोई नहीं है। बाप बेटों से हिसाब लिए बिना नहीं छोड़ता। यह तो हिसाब ही है, रिश्तेदारी नहीं है। आप रिश्तेदार समझ बैठे थे!

apna karma

कुचल डाला, वह भी न्याय

बस में चढ़ने के लिए राइट साइड में एक व्यक्ति खड़ा है, वह रोड के साइड में खड़ा है। रोंग साइड से एक बस आई। वह उसके ऊपर चढ़ गई और उसको मार डाला। क्या इसे न्याय कहा जाएगा?

प्रश्नकर्ता : ड्राइवर ने कुचल डाला, लोग तो ऐसा ही कहेंगे।

दादाश्री : हाँ, उल्टे रास्ते से आकर मारा, गुनाह किया। सीधे रास्ते से आकर मारा होता तो भी गुनाह तो कहा ही जाता। यह तो डबल गुनाह किया। इसे कुदरत कहती है कि 'करेक्ट किया है।' शोरगुल मचाओगे तो व्यर्थ जाएगा। पहले का हिसाब चुका दिया। अब ऐसा समझते नहीं हैं न! पूरी ज़िंदगी तोड़फोड़ में ही बीत जाती है। कोर्ट, वकील और... ! और कभी देरी हो जाए, तब वकील भी गालियाँ देता है कि 'तुम में अक़्ल नहीं है, गधे जैसे हो, गालियाँ खाता है भाई! इसके बजाय यदि कुदरत का न्याय समझ ले, दादाजी ने कहा है वह न्याय, तो हल आ जाए न? और कोर्ट जाने में हर्ज नहीं है। कोर्ट में जाना लेकिन उसके साथ बैठकर चाय पीना, इस तरह सारा व्यवहार करना (समाधानपूर्वक निपटाना) यदि वह नहीं माने तो कहना, हमारी चाय पी लेकिन साथ में बैठ। कोर्ट जाने में हर्ज नहीं, लेकिन प्रेमपूर्वक निपटाना (भीतर राग-द्वेष नहीं हों, उस तरह)!

प्रश्नकर्ता : वैसे लोग हम से विश्वासघात भी कर सकते हैं न?

दादाश्री : मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। यदि आप प्योर हैं, तो आपको कुछ भी नहीं कर सकता, ऐसा इस जगत् का कानून है। प्योर हो तो फिर कोई कुछ करनेवाला रहेगा नहीं। इसलिए भूल सुधारनी हो तो सुधार लेना।

आग्रह छोड़ेगा, वह जीतेगा

इस जगत् में तू न्याय देखने जाता है? हुआ सो न्याय। 'इसने चाँटा मारा तो मुझ पर अन्याय किया', ऐसा नहीं लेकिन जो हुआ वही न्याय, ऐसा जब समझ में आएगा, तब यह सब निबेड़ा आएगा।

apna karma

'हुआ सो न्याय' नहीं कहोगे तो बुद्धि उछल-कूद, उछल-कूद करती रहेगी। अनंत जन्मों से यह बुद्धि गड़बड़ करती आ रही है, मतभेद करवाती है। वास्तव में कुछ कहने का समय ही नहीं आना चाहिए। हमें कुछ कहने का समय ही नहीं आता। जिसने छोड़ दिया, वह जीत गया। वह खुद की ज़िम्मेदारी पर खींचता है। बुद्धि चली गई, वह कैसे पता चलेगा? न्याय ढूँढने मत जाना। 'जो हुआ उसे न्याय' कहेंगे, तब उसे, बुद्धि चली गई, ऐसा कहा जाएगा। बुद्धि क्या करती है? न्याय ढूँढती फिरती है और इसी कारण यह संसार खड़ा है। अतः न्याय मत ढूँढना।

न्याय ढूँढ़ा जाता होगा? जो हुआ सो करेक्ट, तुरंत तैयार। क्योंकि 'व्यवस्थित' के सिवा अन्य कुछ होता ही नहीं है। बेकार की, हाय-हाय! हाय-हाय !!

महारानी ने नहीं, उगाही ने फँसाया

बुद्धि तो तूफान खड़ा कर देती है। बुद्धि ही सब बिगाड़ती है न! बुद्धि यानी क्या? जो न्याय ढूँढे, उसका नाम बुद्धि। कहेगी, 'पैसे क्यों नहीं देंगे, माल तो ले गए है न?' यह 'क्यों' पूछा, वह बुद्धि। अन्याय किया, वही न्याय। आप उगाही के प्रयत्न करते रहना, कहना कि, 'हमें पैसों की बहुत ज़रूरत है और हमें परेशानी है।' फिर भी नहीं दे तो वापस आ जाना। लेकिन 'वह क्यों नहीं देगा?' कहा, तो फिर वकील ढूँढने जाना पड़ेगा। फिर सत्संग छोड़कर वहाँ जाकर बैठेगा। 'जो हुआ सो न्याय' कहें, तो बुद्धि चली जाएगी।

भीतर में ऐसी श्रद्धा रखनी है कि जो हो रहा है, वह न्याय है। फिर भी व्यवहार में आपको पैसों की उगाही करने जाना चाहिए, तब इस श्रद्धा की वजह से आपका दिमाग नहीं बिगड़ेगा। उन पर चिढ़ नहीं होगी और व्याकुलता भी नहीं होगी। जैसे नाटक करते हो न, वैसे वहाँ जाकर बैठना। उससे कहना, 'मैं तो चार बार आया, लेकिन आपसे मिलना नहीं हुआ। इस बार आपका पुण्य है या मेरा पुण्य है, लेकिन हमारा मिलना हो गया।'

apna karma

ऐसा करके मज़ाक करते– करते उगाही करना। और 'आप मज़े में हैं न, मैं तो अभी बड़ी मुश्किल में फँसा हूँ।' तब वह पूछे, 'आपको क्या मुश्किल है?' तब कहना कि 'मेरी मुश्किल तो मैं ही जानता हूँ। आपके पास पैसा नहीं हो तो किसी के पास से मुझे दिलवाइए।' इस तरह बातें करके काम निकालना। लोग तो अहंकारी हैं, तो अपना काम निकल जाएगा। अहंकारी नहीं होते तो कुछ चलता ही नहीं। अहंकारी का अहंकार ज़रा ऊपर चढ़ाएँ, तो वह सब कुछ कर देगा। 'पाँच–दस हज़ार दिलवाइए' कहना। तो भी 'हाँ, मैं दिलवाता हूँ' कहेगा। मतलब झगड़ा नहीं होना चाहिए। राग–द्वेष नहीं होना चाहिए। सौ चक्कर लगाएँ और नहीं दिया तो भी कुछ नहीं। 'हुआ वही न्याय', समझ लेना। निरंतर न्याय ही हो रहा है! क्या अकेले आप की ही उगाही बाकी होगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। सभी धंधेवालों की होती है।

दादाश्री : जगत् में कोई भी महारानी से नहीं फँसा, उगाही से फँसा है। कई लोग मुझे कहते हैं कि 'मेरी दस लाख की उगाही नहीं आ रही।' पहले उगाही आती थी। कमाते थे, तब कोई मुझे कहने नहीं आता था। अब कहने आते हैं। उगाही शब्द आपने सुना है क्या?

प्रश्नकर्ता : कोई बुरा शब्द हमें सुना जाए, वह उगाही ही है न?

दादाश्री : हाँ, उगाही ही है न! वह सुनाता है, बराबर की सुनाता है। डिक्शनरी में भी नहीं हों, ऐसे शब्द भी सुनाता है। फिर आप डिक्शनरी में ढूँढते हो कि 'यह शब्द कहाँ से निकला?' उसमें ऐसा शब्द नहीं होता, ऐसे सिरफिरे होते हैं! लेकिन उनकी अपनी ज़िम्मेदारी पर बोलते हैं न! उसमें हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है न! उतना अच्छा है।

आपको रुपये नहीं लौटाते, वह भी न्याय है। लौटाते हैं, वह भी न्याय है। यह सब हिसाब मैंने बहुत साल पहले निकाल रखा था। रुपया नहीं लौटाए, उसमें किसी का दोष नहीं है। उसी तरह कोई लौटाने आता है, तो उसमें उसका क्या एहसान? इस जगत् का संचालन तो अलग तरीके से है।

व्यवहार में दुःख का मूल

न्याय ढूँढते-ढूँढते तो दम निकल गया है। इन्सान के मन में ऐसा होता है कि मैंने इसका क्या बिगाड़ा है, जो यह मेरा बिगाड़ता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होता है। हम किसी का नाम नहीं लेते, फिर भी लोग हमें क्यों डंडे मारते हैं?

दादाश्री : हाँ, इसीलिए तो इन कोर्ट, वकीलों का सभी का चलता है। ऐसा नहीं हो तो कोर्ट कैसे चलेंगी? वकील का कोई ग्राहक ही नहीं रहेगा न! लेकिन वकील भी कैसे पुण्यशाली, कि मुवक्किल सुबह जल्दी उठकर आते हैं और वकील साहब हजामत बना रहे हों, तो वह बैठा रहता है थोड़ी देर। वकील साहब को घर बैठे रुपया देने आता है। वकील साहब पुण्यशाली हैं न! नोटिस लिखवाकर पचास रुपये दे जाता है! यानी न्याय नहीं ढूँढोगे तो गाड़ी रास्ते पर आएगी। आप न्याय ढूँढते हो, वही उपाधि है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ऐसा समय आया है न कि किसी का भला करें तो वही डंडे मारता है।

दादाश्री : उसका भला किया और फिर वही डंडे मारे, तो उसीका नाम न्याय। लेकिन मुँह पर मत कहना। मुँह पर कहोगे तो फिर उसके मन में ऐसा होगा कि ये बेशर्म हो गए हैं।

प्रश्नकर्ता : हम किसी के साथ बिल्कुल सीधे चल रहे हों, फिर भी वह हमें लकड़ी से मारता है।

दादाश्री : लकड़ी से मारता है, वही न्याय! शांति से रहने नहीं देते?

प्रश्नकर्ता : शर्ट पहनी हो तो कहेंगे, 'शर्ट क्यों पहनी?' और अगर टीशर्ट पहनी तो बोलेंगे, 'टीशर्ट क्यों पहनी?' उसे उतार दें तब भी कहेंगे, 'क्यों उतार दी?'

दादाश्री : उसी को हम न्याय कहते हैं न! और उसमें न्याय ढूँढने

apna karma

गए, उसीकी यह सारी मार पड़ती है। इसलिए न्याय मत ढूँढना। यह हमने सीधी और सरल खोज की है। न्याय ढूँढने से तो इन सभी को मार पड़ी है, और फिर भी हुआ तो वही का वही। आखिर में वही का वही आ जाता है। तो फिर पहले से ही क्यों न समझ जाएँ? यह तो केवल अहंकार की दखल है!

हुआ सो न्याय! इसलिए न्याय ढूँढने मत जाना। तेरे पिताजी कहें कि 'तू ऐसा है, वैसा है।' वह जो हुआ, वही न्याय है। उन पर दावा मत दायर करना कि आप ऐसा क्यों बोले? यह बात अनुभव की है, वर्ना आखिर में थककर भी न्याय तो स्वीकार करना ही पड़ेगा न! लोग स्वीकार करते होंगे या नहीं? भले ही ऐसे निरर्थक प्रयत्न करें लेकिन जैसा था वैसे का वैसा ही रहा। यदि राज़ी खुशी कर लिया होता, तो क्या बुरा था? हाँ, उन्हें मुँह पर कहने की ज़रूरत नहीं है, वर्ना फिर वे वापस उल्टे रास्ते पर चलेंगे। मन में ही समझ लेना कि हुआ सो न्याय।

अब बुद्धि का प्रयोग मत करना। जो होता है, उसे न्याय कहना। ये तो कहेंगे कि 'तुम्हें किसने कहा था, जो पानी गरम रखा?' 'अरे, हुआ सो न्याय।' यह न्याय समझ में आ जाए तो, 'अब मैं दावा दायर नहीं करूँगा' कहेंगे। कहेंगे या नहीं कहेंगे?

कोई भूखा हो, उसे हम भोजन करने बिठाएँ और बाद में वह कहे, 'आपको भोजन करवाने के लिए किसने कहा था? व्यर्थ ही हमें मुसीबत में डाला, हमारा समय बिगड़ा!' ऐसा बोले, तब हम क्या करें? विरोध करेंगे? यह जो हुआ, वही न्याय है।

घर में, दो में से एक व्यक्ति बुद्धि चलाना बंद कर दे न तो सब कुछ ढँग से चलने लगे। वह उसकी बुद्धि चलाए तो फिर क्या होगा? रात को खाना भी नहीं भाएगा फिर।

बरसात नहीं बरसती, वह न्याय है। तब किसान क्या कहेगा? 'भगवान अन्याय कर रहा है।' वह अपनी नासमझी से बोलता है। इससे क्या बरसात होने लगेगी? नहीं बरसता, वही न्याय है। यदि हमेशा बरसात बरसे न, हर साल

बरसात अच्छी हो तो बरसात का उसमें क्या नुकसान होनेवाला था? एक जगह बरसात बहुत ज़ोरो से धूम धड़ाका करके खूब पानी डाल देती है और दूसरी जगह अकाल ला देती है। कुदरत ने सब 'व्यवस्थित' किया हुआ है। आपको लगता है कि कुदरत की व्यवस्था अच्छी है? कुदरत सारा न्याय ही कर रही है।

यानी ये सभी सिद्धांतिक चीज़ें हैं। बुद्धि खाली करने के लिए, यही एक कानून है। जो हो रहा है, उसे न्याय मानोगे तो बुद्धि चली जाएगी। बुद्धि कब तक जीवित रहेगी? जो हो रहा है उसमें न्याय ढूँढने निकले, तो बुद्धि जीवित रहेगी। जब कि इससे तो बुद्धि समझ जाती है, बुद्धि को लाज आती है फिर। उसे भी लाज आती है, अरे! अब तो ये मालिक ही ऐसा बोल रहे हैं, इससे अच्छा तो मुझे ठिकाने आना पड़ेगा।

न्याय मत ढूँढना, इसमें

प्रश्नकर्ता : बुद्धि को निकालना ही है, क्योंकि वह बहुत मार खिलाती है।

दादाश्री : इस बुद्धि को निकालना हो तो बुद्धि खुद अपने आप नहीं जाएगी। बुद्धि 'कार्य' है, उसके 'कारण' निकालेंगे, तो यह 'कार्य' चला जाएगा। यह बुद्धि 'कार्य' है, उसके 'कारण' क्या हैं? वास्तव में जो हुआ, उसे न्याय कहा जाएगा, तब वह चली जाएगी। जगत् क्या कहता है? वास्तव में जो हो गया है, उसे स्वीकार लेना चाहिए। और न्याय ढूँढते रहेंगे न तो उससे झगड़े चलते रहेंगे।

अत: बुद्धि ऐसे ही नहीं जाएगी। बुद्धि जाने का मार्ग क्या है? उसके कारणों का सेवन नहीं करोगे तो बुद्धि, वह 'कार्य' नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि बुद्धि 'कार्य' है और उसके कारण ढूँढोगे तो, वह कार्य बंद हो जाएगा।

दादाश्री : उसके कारणो में, हम जो न्याय ढूँढने निकले, वही उसका कारण है। न्याय ढूँढना बंद कर दोगे तो बुद्धि चली जाएगी। न्याय

apna karma

क्यों ढूँढते हो? तब बहू क्या कहती है कि 'लेकिन तुम मेरी सास को नहीं पहचानती, मैं आई, तभीसे वह दु:ख दे रही है, इसमें मेरा क्या गुनाह है?'

कोई बिना पहचाने दु:ख देता होगा? वह हिसाब में जमा होगा, इसलिए तुझे देती रहती है। तब कहे, 'लेकिन मैंने तो उनका मुँह भी नहीं देखा था।' 'अरे, तूने इस जन्म में नहीं देखा लेकिन पूर्वजन्म का हिसाब क्या कह रहा है?' इसलिए जो हुआ, वही न्याय।

घर में बेटा दादागिरी करता है? वह दादागिरी करता है, वही न्याय। यह तो बुद्धि दिखाती है, बेटा होकर बाप के सामने दादागिरी? जो हुआ, वही न्याय!

अत: यह 'अक्रम विज्ञान' क्या कहता है? देखो यह न्याय! लोग मुझसे पूछते हैं, 'आपने बुद्धि किस तरह निकाल दी?' न्याय नहीं ढूँढा तो बुद्धि चली गई। बुद्धि कब तक रहेगी? न्याय ढूँढेंगे और न्याय को आधार देंगे, तब तक बुद्धि रहेगी, उस पर बुद्धि कहेगी, 'अपने पक्ष में हैं भाईसाहब।' और कहेगी, 'इतनी अच्छी तरह नौकरी की और ये डायरेक्टर किस आधार पर उल्टा बोल रहे हैं?' इस तरह उसे आधार देते हो? न्याय ढूँढते हो? वे जो बोलते हैं, वही करेक्ट है। अब तक क्यों नहीं बोल रहे थे? किस आधार पर नहीं बोल रहे थे? अब कौन-से न्याय के आधार पर बोल रहे हैं? सोचने पर नहीं लगता कि ये जो बोल रहे हैं, वह सप्रमाण है? अरे, तनख्वाह नहीं बढ़ाते, वही न्याय है। हम उसे अन्याय कैसे कह सकते हैं?

बुद्धि ढूँढे न्याय

यह सारा तो मोल लिया हुआ दु:ख है और थोड़ा-बहुत जो दु:ख है, वह बुद्धि की वजह से है। सभी में बुद्धि होती है न? वह 'डिवेलप्ड बुद्धि' दु:ख करवाती है। जहाँ नहीं होता वहाँ से भी दु:ख ढूँढ निकालती है। मेरी बुद्धि तो डिवेलप होने के बाद चली गई। बुद्धि ही खत्म हो गई! बोलिए, मज़ा आएगा या नहीं आएगा? बिल्कुल, एक परसेन्ट भी बुद्धि रही नहीं। तब एक आदमी मुझसे पूछता है कि, 'बुद्धि कैसे खत्म हो गई?' 'तू चली जा, तू

apna karma

चली जा' ऐसा कहने से?' मैंने कहा, 'नहीं भाई, ऐसा नहीं करते। उसने तो अब तक हमारा रौब रखा। दुविधा में होते थे, तब सही वक्त पर 'क्या करना, क्या नहीं करना?' उसका सभी मार्गदर्शन किया। उसे कैसे निकाल सकते हैं?' फिर मैंने कहा, 'जो न्याय ढूँढता है न, उसके वहाँ बुद्धि हमेशा के लिए निवास करती है'। 'हुआ सो न्याय' ऐसा कहनेवाले की बुद्धि चली जाती है। न्याय ढूँढने गए, वह बुद्धि।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, जीवन में जो भी आए, उसे स्वीकार लेना चाहिए?

दादाश्री : मार खाकर स्वीकार करना, उससे अच्छा तो खुशी से स्वीकार लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : संसार है, बच्चे हैं, बेटे की बहू है, यह है, वह है, इसलिए संबंध तो रखना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, सभी कुछ रखना।

प्रश्नकर्ता : तब उसमें मार पड़े तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सभी संबंध रखकर और यदि मार पड़े, तो उसे स्वीकार लेना है। वर्ना फिर भी यदि मार पड़े तो क्या कर सकते हैं? दूसरा कोई उपाय है?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं, वकीलों के पास जाना पड़ेगा।

दादाश्री : हाँ, और क्या होगा? वकील रक्षा करेगा या उसकी फ़ीस लेगा?

जहाँ 'हुआ सो न्याय', वहाँ बुद्धि 'आउट'

न्याय ढूँढना शुरू हुआ कि बुद्धि खड़ी हो जाती है। बुद्धि समझती है कि अब मेरे बगैर चलनेवाला नहीं है और यदि हम कहें कि हुआ सो न्याय है, इस पर बुद्धि कहेगी, 'अब इस घर में अपना रौब नहीं चलेगा'। वह

apna karma

विदाई लेकर चली जाएगी। कोई उसका समर्थक होगा, वहाँ घुस जाएगी। उसकी आसक्तिवाले तो बहुत लोग हैं न! ऐसी मन्नत मानते हैं, मेरी बुद्धि बढ़े! और उसके सामनेवाले पलड़े में उतना ही दु:ख-जलन बढ़ती जाती है। हमेशा बेलेन्स तो चाहिए न? उसके सामनेवाले पलड़े में बेलेन्स चाहिए ही! हमारी बुद्धि खत्म, इसलिए दु:ख-जलन खत्म!

विकल्पों का अंत, वही मोक्षमार्ग

अत: जो हुआ, उसे न्याय कहोगे न तो निर्विकल्प रहोगे और लोग निर्विकल्पी होने के लिए न्याय ढूँढने निकले हैं। विकल्पों का अंत आए, वही मोक्ष का रास्ता! विकल्प खड़े नहीं हों, ऐसा है न अपना मार्ग?

मेहनत किए बगैर, अपने अक्रम मार्ग में मनुष्य आगे बढ़ सकता है। हमारी चाबियाँ ही ऐसी हैं कि मेहनत किए बगैर बढ़ जाता है।

अब बुद्धि जब विकल्प करवाए न, तब कह देना, 'हुआ सो न्याय।' बुद्धि न्याय ढूँढे कि मुझ से छोटा है, मर्यादा नहीं रखता। मर्यादा रखी, वह भी न्याय और नहीं रखी, वह भी न्याय। बुद्धि जितनी निर्विवाद होगी, तो निर्विकल्प होगा!

यह विज्ञान क्या कहता है? न्याय तो पूरा जगत् ढूँढ रहा है। उसके बजाय हम ही स्वीकार लें कि हुआ सो न्याय। फिर जज भी नहीं चाहिए और वकील भी नहीं चाहिए। वर्ना आखिर में मार खाकर भी ऐसा ही रहता है न?

किसी कोर्ट में नहीं मिलता संतोष

और शायद कभी ऐसा मान लो न कि किसी व्यक्ति को न्याय चाहिए, तो नीचे की कोर्ट में से जजमेन्ट करवाया। वकील लड़े, बाद में जजमेन्ट आया, न्याय हुआ। तब कहता है, 'नहीं, इस न्याय से मुझे संतोष नहीं है।' न्याय हुआ फिर भी संतोष नहीं। 'तो अब क्या करें? ऊपरी कोर्ट में चलो।' तब डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में गए। वहाँ के जजमेन्ट से भी संतोष नहीं हुआ।

apna karma

तब कहें, 'अब?' तो कहे, 'नहीं, वहाँ हाईकोर्ट में!' वहाँ भी संतोष नहीं हुआ। फिर सुप्रीम कोर्ट में गए, वहाँ भी संतोष नहीं हुआ। आखिर में प्रेसिडन्ट से कहा। फिर भी उनके न्याय से भी संतोष नहीं हुआ। मार खाकर मरते हैं! न्याय ढूँढना ही मत कि यह आदमी मुझे गालियाँ क्यों दे गया या मुवक्किल मुझे मेरी वकालत की फ़ीस क्यों नहीं देता? नहीं देता, वही न्याय है। बाद में दे जाए, वह भी न्याय है। तू न्याय मत ढूँढना।

न्याय : कुदरती और विकल्पी

दो प्रकार के न्याय हैं। एक विकल्पों को बढ़ानेवाला न्याय और एक विकल्पों को घटानेवाला न्याय। बिल्कुल सच्चा न्याय विकल्पों को घटानेवाला है कि 'हुआ सो न्याय ही है।' अब तुम इस पर दूसरा दावा दायर मत करना। अब तुम अपनी बाकी बातों पर ध्यान दो। तुम इस पर दावा दायर करोगे, तो तुम्हारी बाकी बातें रह जाएँगी।

न्याय ढूँढने निकले तो विकल्प बढ़ते ही जाएँगे और यह कुदरती न्याय विकल्पों को निर्विकल्प बनाता जाता है। जो हो चुका है, वही न्याय है। और इसके बावजूद भी पाँच आदमियों का पंच जो कहे, वह भी उसके विरूद्ध में चला जाता है, तब वह उस न्याय को भी नहीं मानता, किसी की बात नहीं मानता। तब फिर विकल्प बढ़ते ही जाते हैं। अपने इर्द-गिर्द जाल ही बुन रहा है वह आदमी कुछ भी प्राप्त नहीं करता। बहुत दु:खी हो जाता है! इसके बजाय पहले से ही श्रद्धा रखना कि हुआ सो न्याय।

और कुदरत हमेशा न्याय ही करती रहती है, निरंतर न्याय ही कर रही है लेकिन वह प्रमाण नहीं दे सकती। प्रमाण तो 'ज्ञानी' देते हैं कि कैसे यह न्याय है? कैसे हुआ, वह 'ज्ञानी' बता देते हैं। उसे संतुष्ट कर दें और तब निबेड़ा आता है। निर्विकल्पी हो जाएगा तो निबेड़ा आएगा।

– जय सच्चिदानंद